

‘हीली-बोन की बतखें’ में प्रकृति और मनुष्य का अंतर्संबंध

डॉ. रम्या एल.

सह आचार्य, श्री अय्यप्पा कॉलेज, इरमल्लिककरा, चेंगन्नूर, केरल, भारत

सारांश

हिंदी साहित्य में प्रकृति और मनुष्य के संबंध का चित्रण विभिन्न रूपों में हुआ है, किंतु अज्ञेय की कहानियों में यह संबंध विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक धरातल पर अभिव्यक्त होता है। उनकी प्रसिद्ध कहानी ‘हीली-बोन की बतखें’ मनुष्य और प्रकृति के अंतर्संबंध की एक मार्मिक कथा है, जिसमें प्रकृति केवल बाह्य परिवेश न रहकर मानव चेतना, संवेदना और अस्तित्व का अभिन्न अंग बन जाती है। कहानी की नायिका हीली-बोन अपने प्राकृतिक परिवेश से गहराई से जुड़ी हुई है। उसकी बतखें, पहाड़, जंगल, झरने, चीड़ के वृक्ष तथा लोमड़ी जैसे प्राकृतिक तत्त्व उसके जीवन के भावनात्मक संसार का निर्माण करते हैं। कहानी में प्रकृति और मनुष्य के संबंध को संघर्ष, सह-अस्तित्व, करुणा तथा आत्मबोध के स्तर पर प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में कहानी के आधार पर प्रकृति और मनुष्य के अंतर्संबंध का विश्लेषण किया गया है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि अज्ञेय किस प्रकार प्रकृति को मानवीय संवेदनाओं के विस्तार के रूप में चित्रित करते हैं। कहानी में बतखें, लोमड़ी, पहाड़ी परिवेश, चीड़ के वृक्ष, बुरैस के फूल और संध्या का प्राकृतिक दृश्य कथानक को अर्थपूर्ण बनाने के साथ पात्रों की मानसिक अवस्थाओं को भी व्यक्त करते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य कहानी में प्रकृति और मनुष्य के अंतर्संबंध का पर्यावरणीय, मनोवैज्ञानिक तथा संवेदनात्मक दृष्टियों से विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि मनुष्य जब प्रकृति को केवल अपने हितों के आधार पर देखता है, तब अन्य जीवों के अस्तित्व और उनके जीवन-संघर्ष की उपेक्षा करता है। इसके विपरीत, प्रकृति के व्यापक जीवन-संसार के प्रति संवेदनशील दृष्टि मनुष्य को अपने सीमित स्वार्थ से बाहर निकलकर सह-अस्तित्व के महत्त्व को समझने की प्रेरणा देती है।

मुख्य शब्द: प्रकृति, मनुष्य, संवेदना, सह-अस्तित्व, पर्यावरण चेतना।

भूमिका

साहित्य और प्रकृति का संबंध अत्यंत प्राचीन है। मानव सभ्यता के विकास के साथ प्रकृति मनुष्य के जीवन, चिंतन, कल्पना और सृजन का अभिन्न अंग रही है। मनुष्य का भोजन, आवास, आजीविका और सांस्कृतिक जीवन प्रकृति पर निर्भर करते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रकृति मनुष्य की भावनाओं, स्मृतियों और सौंदर्यबोध को भी प्रभावित करती है। साहित्य में इस संबंध की अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में हुई है। कहीं प्रकृति मानवीय भावनाओं की सहचरी बनकर उपस्थित होती है, तो कहीं वह मनुष्य के अस्तित्व, संघर्ष और सीमाओं को समझने का माध्यम बनती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। प्रकृति को केवल रमणीय दृश्य अथवा मानवीय भावनाओं के प्रतीक के रूप में देखने के स्थान पर उसके स्वतंत्र अस्तित्व और मनुष्य के साथ उसके जटिल संबंधों पर भी विचार किया जाने लगा। पर्यावरणीय संकट, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तथा जीव-जगत के प्रति बढ़ती संवेदनहीनता ने साहित्यिक आलोचना में पर्यावरणीय दृष्टिकोण की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। इस संदर्भ में साहित्य मनुष्य-केंद्रित दृष्टिकोण की सीमाओं की पहचान करने तथा प्रकृति के साथ उसके संबंधों पर पुनर्विचार करने का अवसर प्रदान करता है। अज्ञेय हिंदी साहित्य के प्रमुख आधुनिकतावादी

रचनाकारों में गिने जाते हैं। उनकी रचनाओं में व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना, आत्मसंघर्ष, अस्तित्वगत प्रश्न और परिवेश के साथ उसका संबंध महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके कथा-साहित्य में बाह्य संसार और आंतरिक मनःस्थिति के बीच गहरा संबंध दिखाई देता है। प्रकृति का वर्णन प्रायः पात्रों के मनोवैज्ञानिक अनुभवों, स्मृतियों और भावनात्मक द्वंद्वों के साथ जुड़कर अर्थ ग्रहण करता है।

अज्ञेय की कहानी 'हीली-बोन की बतखें' इसी दृष्टि से विशेष महत्व रखती है। कहानी की घटनाएँ पहली दृष्टि में एक स्त्री, उसकी बतखों और उन्हें मारने वाली लोमड़ी के इर्द-गिर्द केंद्रित दिखाई देती हैं। किंतु इसके भीतर मनुष्य के स्वार्थ, जीव-जगत के प्रति उसकी दृष्टि, हिंसा, करुणा और नैतिक आत्मबोध से जुड़े गंभीर प्रश्न अंतर्निहित हैं। कहानी यह विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि क्या मनुष्य किसी दूसरे जीव को केवल इसलिए शत्रु मान सकता है कि उसका व्यवहार मनुष्य के हितों के प्रतिकूल है? क्या किसी जीव के जीवन-संघर्ष को समझे बिना उसके अस्तित्व का निर्णय करना उचित है? ऐसे प्रश्न कहानी को सामान्य घटनाक्रम से आगे ले जाकर प्रकृति और मनुष्य के संबंधों पर एक व्यापक विमर्श का आधार प्रदान करते हैं।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. अज्ञेय की कहानी 'हीली-बोन की बतखें' में प्रकृति और मनुष्य के अंतर्संबंध का विश्लेषण करना।
2. कहानी में प्राकृतिक परिवेश तथा पात्रों की मानसिक अवस्थाओं के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना।
3. हीली-बोन के चरित्र के माध्यम से मानवीय संवेदना, स्वार्थ और आत्मबोध के अंतर्विरोधों का अध्ययन करना।
4. बतखों और लोमड़ी के प्रसंग के आधार पर जीव-जगत के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
5. कहानी में निहित पर्यावरणीय चेतना, करुणा और सह-अस्तित्व की अवधारणा को रेखांकित करना।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र में मुख्यतः गुणात्मक, विश्लेषणात्मक तथा पाठ-केंद्रित पद्धति का उपयोग किया गया है। शोध का प्राथमिक आधार अज्ञेय की कहानी 'हीली-बोन की बतखें' है। कहानी की घटनाओं, पात्रों, प्राकृतिक बिंबों और प्रतीकात्मक अर्थों का निकट पाठ करते हुए प्रकृति तथा मनुष्य के संबंधों की व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरणीय आलोचना और मानवीय संवेदना से संबंधित सामान्य सैद्धांतिक अवधारणाओं के आधार पर कहानी की प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य कहानी पर किसी बाहरी विचारधारा को आरोपित करना नहीं, बल्कि उसके पाठ में निहित अर्थ-संभावनाओं को विश्लेषण के माध्यम से स्पष्ट करना है।

कहानी में प्रकृति और मनुष्य का संबंध

अज्ञेय हिंदी साहित्य के उन रचनाकारों में अग्रणी हैं जिन्होंने मनुष्य के आंतरिक संसार और बाह्य परिवेश के संबंध को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में प्रकृति मात्र दृश्य-वर्णन का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह पात्रों के व्यक्तित्व, मानसिक संघर्ष और अस्तित्वगत अनुभूतियों की सहभागी बन जाती है। 'हीली-बोन की बतखें' इसी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कहानी है। अज्ञेय की कहानी 'हीली-बोन की बतखें' प्रकृति, मानवीय संवेदना, अकेलेपन

और जीवन के अंतर्द्व द्व को प्रस्तुत करने वाली एक मार्मिक कहानी है। इसकी नायिका हीली-बोन खासी समाज की एक अविवाहित स्त्री है, जो पहाड़ी क्षेत्र में अकेली रहती है। उसके जीवन का प्रमुख सहारा उसकी बतखें हैं, जिनके अंडों से उसकी आजीविका चलती है। एक लोमड़ी बार-बार उसकी बतखों को मार देती है। इससे परेशान होकर हीली उसकी हत्या करने का उपाय खोजती है। इसी दौरान उसकी मुलाकात कैप्टन दयाल से होती है, जो लोमड़ी का शिकार करने के लिए तैयार हो जाता है।

रात में कैप्टन दयाल गोली चलाकर लोमड़ी को घायल कर देता है। अगले दिन हीली उसके साथ घायल लोमड़ी की खोज में जंगल की ओर जाती है। खोजते हुए दोनों एक झाड़ी के भीतर स्थित लोमड़ी के बिल तक पहुँचते हैं। वहाँ नर लोमड़ी मृत पड़ी है और मादा लोमड़ी अपने तीन बच्चों के साथ उसके पास खड़ी है। अपने साथी की मृत्यु और बच्चों की असहाय स्थिति देखकर हीली का हृदय करुणा से भर उठता है। उसे अनुभव होता है कि जिस लोमड़ी को वह अपना शत्रु समझती थी, वह भी अपने परिवार के अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही थी।

इस मार्मिक दृश्य से विचलित होकर हीली वहाँ से लौट आती है और आवेग में अपनी सभी बतखों को मार डालती है। जब कैप्टन दयाल उसे इस अवस्था में देखता है, तो वह उसे 'हत्यारा' कहकर दूर रहने को कहती है। यह प्रतिक्रिया उसके भीतर उत्पन्न गहरे मानसिक द्वंद्व और संवेदनात्मक परिवर्तन को व्यक्त करती है। यह कहानी पहली दृष्टि में एक साधारण ग्रामीण जीवन, कुछ बतखों और एक लोमड़ी के इर्द-गिर्द घूमती हुई दिखाई देती है, किंतु गहन अध्ययन करने पर यह मनुष्य और प्रकृति के जटिल तथा बहुआयामी संबंधों को उद्घाटित करती है।

कहानी का परिवेश मेघालय का पहाड़ी क्षेत्र है, जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य अपने पूर्ण वैभव के साथ उपस्थित है। चीड़ के वृक्षों की हरियाली, बुरैस के लाल फूल, पहाड़ी पगडंडियाँ, झरनों की ध्वनि और वन्य जीवन कथा के वातावरण को जीवंत बनाते हैं। अज्ञेय ने इन प्राकृतिक तत्वों का उपयोग केवल दृश्यात्मक सौंदर्य के लिए नहीं किया है, बल्कि उन्हें कथा की अर्थ-संरचना का महत्वपूर्ण अंग बनाया है। प्रकृति यहाँ पात्रों की भावनाओं का प्रतिबिंब भी है और उनके जीवन-दर्शन का आधार भी। कभी-कभी प्रकृति का मानवीकरण भी दृश्यमान है। "कैप्टन दयाल बाड़े में से बाहर होकर रास्ते पर हो लिए और ऊपर चढ़ने लगे, जिधर नई धूप में चीड़ की हरियाली दुरंगी हो रही थी और बीच-बीच में बुरैस के गुच्छे – गुच्छे गहरे लाल फूल मानो कह रहे थे- पहाड़ के भी हृदय है, जंगल के भी हृदय हैं।"¹

कहानी की नायिका हीली-बोन खासी समाज की एक अविवाहित स्त्री है, जो अपने छोटे से घर और बगीचे में अकेली रहती है। उसका जीवन बाहरी दृष्टि से शांत और व्यवस्थित प्रतीत होता है, किंतु उसके भीतर गहरे अकेलेपन और रिक्तता का अनुभव मौजूद है। उसके जीवन में बतखों का विशेष महत्व है। वे केवल उसकी आय का स्रोत नहीं हैं, बल्कि उसके स्नेह, ममता और आत्मीयता का केंद्र भी हैं। इस प्रकार बतखें उसके व्यक्तित्व का विस्तार बन जाती हैं। मनुष्य और प्रकृति के संबंध की यह स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ पशु-पक्षी और मनुष्य के बीच उपयोगितावादी संबंध से आगे बढ़कर भावनात्मक संबंध स्थापित होता है।

प्रकृति के साथ हीली का संबंध उसके जीवन की प्रत्येक गतिविधि में दिखाई देता है। वह पहाड़ों, वृक्षों और अपने बगीचे के साथ उसी प्रकार जुड़ी हुई है जैसे कोई व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के साथ जुड़ा होता है। उसके लिए प्रकृति कोई बाहरी वस्तु नहीं है, बल्कि उसके अस्तित्व का हिस्सा है। यही कारण है कि जब लोमड़ी उसकी बतखों को मारती है तो उसे केवल आर्थिक हानि नहीं होती, बल्कि उसकी आत्मीय दुनिया आहत होती है। यहाँ प्रकृति के भीतर उपस्थित विभिन्न जीवों के बीच संघर्ष का प्रश्न भी उठता है। बतखें और लोमड़ी दोनों प्रकृति के ही अंग हैं, किंतु मनुष्य अपनी निकटता और हितों के आधार पर एक को प्रिय और दूसरे को शत्रु मान लेता है। कहानी में कैप्टन दयाल

का प्रवेश इसी संघर्ष को नए आयाम प्रदान करता है। वह आधुनिक मनुष्य का प्रतिनिधि है, जो समस्या का समाधान हिंसा अथवा नियंत्रण के माध्यम से करना चाहता है। लोमड़ी द्वारा बतखों को मारे जाने की समस्या का समाधान वह शिकार के रूप में देखता है। दूसरी ओर हीली-बोन की दृष्टि प्रारंभ में इसी सोच के निकट दिखाई देती है क्योंकि उसकी भावनाएँ अपनी बतखों के साथ जुड़ी हुई हैं। किंतु कहानी का विकास इस दृष्टिकोण को चुनौती देता है।

अज्ञेय ने प्रकृति के चित्रण को पात्रों की मानसिक अवस्थाओं के साथ अत्यंत कलात्मक ढंग से जोड़ा है। साँझ के समय बुर्रस के फूलों का अंधकार में विलीन होना हीली के जीवन में रंगों और उल्लास के क्षीण हो जाने का प्रतीक बन जाता है। पहाड़ों की निस्तब्धता उसके अकेलेपन का विस्तार प्रतीत होती है। “हीली का मन उदास होकर अपने में सिमट आया। सामने फैला हुआ नाड.थ्लेम का पर्वतीय सौंदर्य जैसे भाप बनकर उड़ गया, चीड़ और बुर्रस, चट्टानें, पूर्व पुरुषों और स्त्रियों की खड़ी और पड़ी स्मारक शिलाएँ, घास की टीलों-सी लहरें, दूर नीचे पहाड़ी नदी का ताम्र मुकुट, मखमली चादर में रेशमी डोरे-सी झलकती हुई पगडंडी- सब मूर्त आकार पीछे हटकर तिरोहित हो गए।”² इस प्रकार प्रकृति का प्रत्येक दृश्य उसके मन की किसी अवस्था को अभिव्यक्त करता है। यह शैली अज्ञेय की कथा-कला की महत्वपूर्ण विशेषता है। वे बाहरी प्रकृति और भीतरी मनःस्थिति के बीच ऐसा संबंध स्थापित करते हैं कि दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे लगते हैं।

कहानी का चरम बिंदु तब आता है जब हीली और कैप्टन दयाल घायल लोमड़ी की खोज करते हुए उसके बिल तक पहुँचते हैं। वहाँ का दृश्य कहानी के पूरे अर्थ को बदल देता है। घायल नर-लोमड़ी मृत्यु के निकट है और मादा लोमड़ी अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ उसके पास खड़ी है। इस दृश्य को अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप में चित्रित किया गया है। “करारे में मिट्टि खोदकर बनाई हुई खोह में- या कि खोह की देहरी पर – नर लोमड़ी का प्राणहीन आकर दुबका पड़ा था- कास के फूल के झाड़ू -सी पूँछ उसकी रानों को ढँक रही थी, जहाँ गोली का जख्म होगा। भीतर शिथिल- गात लोमड़ी उस शव पर झुकी खड़ी थी, शव के सिर के पास मुँह किए मानो उसे चाटना चाहती हो और फिर सहमकर रुक जाती हो। लोमड़ी के पाँवों से उलझते हुए तीन छोटे-छोटे बच्चे कुनमुना रहे थे।”³ यह दृश्य प्रकृति के भीतर निहित प्रेम, मातृत्व, परिवार और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। अब तक जिस लोमड़ी को केवल एक हिंसक जीव समझा जा रहा था, वह एक परिवार की सदस्य और अपने बच्चों की संरक्षक के रूप में सामने आती है।

यहीं से हीली की चेतना में परिवर्तन आरंभ होता है। उसे पहली बार यह अनुभव होता है कि लोमड़ी की हिंसा के पीछे भी जीवन का संघर्ष है। वह अपनी संतानों को जीवित रखने के लिए बतखों का शिकार करती है। यह प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। मनुष्य जिस व्यवहार को क्रूरता मानता है, वह प्रकृति की दृष्टि से जीवन-रक्षा का साधन हो सकता है। इस बोध के साथ ही मनुष्य और प्रकृति के बीच स्थापित विरोध का भाव टूटने लगता है।

अज्ञेय यहाँ प्रकृति के प्रति गहरी मानवीय संवेदना का विकास करते हैं। कहानी यह संकेत देती है कि प्रकृति के प्रत्येक जीव का अपना अस्तित्व, अपना संघर्ष और अपना औचित्य है। मनुष्य यदि केवल अपने लाभ और हानि के आधार पर प्रकृति का मूल्यांकन करेगा तो वह उसके वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाएगा। प्रकृति में जीवन और मृत्यु, निर्माण और विनाश, प्रेम और संघर्ष साथ-साथ चलते हैं। यही उसका संतुलन है।

हीली द्वारा अपनी ही बतखों की हत्या कर देना कहानी का सबसे जटिल और बहुस्तरीय प्रसंग है। इसे केवल मानसिक विचलन के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह घटना उसके भीतर उत्पन्न उस गहरे आघात और आत्मबोध की अभिव्यक्ति है, जो लोमड़ी और उसके परिवार को देखकर उत्पन्न हुआ है। उसकी चेतना में मनुष्य और प्रकृति के संबंध का नया

अर्थ उभरता है। वह समझ जाती है कि जीवन के व्यापक संसार में उसकी व्यक्तिगत पीड़ा अकेली नहीं है। प्रत्येक जीव अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है।

कहानी में स्त्री और प्रकृति का संबंध भी विशेष महत्त्व रखता है। हीली और मादा लोमड़ी दोनों मातृत्व, संरक्षण और संवेदनशीलता के प्रतीक हैं। यद्यपि हीली जैविक अर्थों में माँ नहीं है, फिर भी उसकी बतखों के प्रति उसका लगाव मातृत्व का ही रूप है। जब वह लोमड़ी को उसके बच्चों के साथ देखती है, तब वह स्वयं को उस स्थिति से जोड़ लेती है। यही कारण है कि उसके भीतर गहरी करुणा उत्पन्न होती है। अज्ञेय इस समानता के माध्यम से स्त्री और प्रकृति के बीच विद्यमान आत्मीय संबंध को रेखांकित करते हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह कहानी अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक सभ्यता में मनुष्य स्वयं को प्रकृति का स्वामी समझने लगा है, जबकि अज्ञेय इस धारणा का खंडन करते हैं। कहानी यह संदेश देती है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका एक अंग है। प्रकृति के साथ संतुलन और सह-अस्तित्व ही जीवन की वास्तविक आवश्यकता है। यदि मनुष्य प्रकृति के अन्य जीवों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करेगा, तो वह अंततः स्वयं भी असंतुलन का शिकार होगा।

अतः कहा जा सकता है कि 'हीली-बोन की बतखें' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के संबंधों पर गहन चिंतन प्रस्तुत करने वाली रचना है। इसमें प्रकृति को संवेदनशील, जीवंत और अर्थपूर्ण सत्ता के रूप में चित्रित किया गया है। हीली-बोन का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति के साथ वास्तविक संबंध करुणा, सहानुभूति और आत्मीयता पर आधारित होता है। कहानी मनुष्य को यह समझने की प्रेरणा देती है कि प्रकृति के प्रत्येक जीव का जीवन मूल्यवान है और सह-अस्तित्व ही जीवन का मूल सिद्धांत है। इसी कारण यह कहानी आज के पर्यावरणीय संकट और मानवीय संवेदनहीनता के दौर में और अधिक प्रासंगिक हो उठती है। प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध की स्थापना ही इस कहानी का मूल संदेश है तथा यही इसकी स्थायी साहित्यिक उपलब्धि भी है।

निष्कर्ष

अज्ञेय की कहानी 'हीली-बोन की बतखें' में प्रकृति और मनुष्य का अंतर्संबंध सौंदर्यपरक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक तथा पर्यावरणीय स्तरों पर विकसित होता है। कहानी का प्राकृतिक परिवेश केवल घटनाओं की पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह पात्रों के अनुभवों, स्मृतियों और मानसिक अवस्थाओं को अर्थ प्रदान करता है। संध्या के समय प्रकृति के रंगों का विलुप्त होना, पहाड़ी परिवेश की उपस्थिति और हीली के बगीचे का चित्रण इस संबंध के विभिन्न रूपों को सामने लाते हैं। बतखों और लोमड़ी के माध्यम से कहानी मनुष्य के हितों तथा दूसरे जीवों के स्वतंत्र अस्तित्व के बीच उत्पन्न संघर्ष को उद्घाटित करती है। हीली प्रारंभ में लोमड़ी को अपनी बतखों के लिए संकट मानती है, किंतु उसके परिवार को देखने के बाद उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन करुणा, आत्मबोध और नैतिक द्वंद्व की जटिल प्रक्रिया को व्यक्त करता है। अपनी बतखों को मार देने की घटना इस जटिलता को और तीव्र बनाती है तथा पाठक को मनुष्य की संवेदना और व्यवहार के बीच संबंध पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

कहानी का मूल महत्त्व इस बात में है कि वह मनुष्य को प्रकृति का एकमात्र केंद्र मानने वाली दृष्टि पर प्रश्न उठाती है। प्रकृति के प्रत्येक जीव का अपना जीवन-संघर्ष और अस्तित्व है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने हितों को समझते हुए भी अन्य जीवों के जीवन को केवल उपयोगिता या हानि के आधार पर न आँके। सह-अस्तित्व का विचार इसी व्यापक समझ से विकसित होता है। अंततः कहा जा सकता है कि 'हीली-बोन की बतखें' प्रकृति और मनुष्य के संबंधों की जटिलता को संवेदनात्मक तथा दार्शनिक स्तर पर अभिव्यक्त करने वाली महत्त्वपूर्ण कहानी है। इसकी



पर्यावरणीय प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि यह मनुष्य को अपने दृष्टिकोण की सीमाओं की पहचान करने और दूसरे जीवों के प्रति अधिक संवेदनशील बनने की प्रेरणा देती है। कहानी का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए केवल बाह्य संरक्षण पर्याप्त नहीं है; इसके लिए मनुष्य की चेतना, नैतिक दृष्टि और व्यवहार में भी परिवर्तन आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अज्ञेय, 2017, हीली बोन की बतखें, डॉ. गिरिजाकुमारी आर, स्वर्ण कहानियाँ, पृ. 46, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. अज्ञेय, 2017, हीली बोन की बतखें, डॉ. गिरिजाकुमारी आर, स्वर्ण कहानियाँ, पृ. 49-50, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. अज्ञेय, 2017, हीली बोन की बतखें, डॉ. गिरिजाकुमारी आर, स्वर्ण कहानियाँ, पृ. 46, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद